श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

तृतीय वर्ष - अभ्यास - ३

अगस्त 2025

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. नारकी ने बनाया हुआ उत्तर वैक्रिय शरीर..... तक टिकता है ।
२. चलित रस, जिसका स्वाद बदल गया हो या बास आना शुरु हो जाये ऐसे खाद्य पदार्थ ..... में आते हैं ।
३. मेवे काजु वगैरह..... तक चलते हैं ।
४. गर्भज तिर्यंच को..... संघयण होते हैं ।
५. घर में बनाई हुई रसोई में से साधु के लिये अलग निकालकर रखे तो ..... दोष कहलाता है ।
६. पालक की भाजी ..... है ।
७. पार्श्वनाथ प्रभु का स्तवन..... की परंपरा का मूल कारण रुप है ।
८. विकलेन्द्रिय को..... संस्थान होता है ।
९. अनाज पीसता व्यक्ति गोचरी वहोरावे वो..... दोष लगता है ।
१०. ज्योतिषचक्र के देवों को ..... होती है ।
११. यहाँ पर सभी जीव २४ दंडको में, फिर वह देव का हो या मानव का तिर्यंच का हो या नारकी का सभी जीव ..... के दास हैं ।
१२. रौद्रध्यान का चौथा प्रकार ..... है ।
१३. देशविरति गुणस्थानक की स्थिति..... वर्ष की है ।
१४. यदि तुम ..... योग्य आहार बनाओ तो साधु कभी भी तुम्हारे घर से खाली हाथ नहीं जायेगे ।
१५. भवनपति को ..... लेश्या होती है ।
१६. ध्यान यह..... है ।
१७. चतुर्विध संघ सम्यगदृष्टि की नजर में ..... स्वरुप होते हैं ।
१८. जघन्य देशविरती वाला .....व्रतों को धारण करने वाला होता है ।
१९. वायुकाय..... आकार वाले होते हैं ।
२०. आहार प्राप्त करने अपनी जाति को प्रकाशे वो ..... कहलाता है ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. वज्रस्वामी अनशन करके स्वर्ग गये पश्चात कितने वर्ष का दुष्काल पडा ?
२. नमिउणं स्तोत्र की रचना किसने की है ?
३. छेवट्ठु (सेवार्त) संघयण किसे होता है ?
४. अल्पक्रूर परिणाम वाली कौनसी लेश्या होती है ?
५. वज्रस्वामी ने जिस पर्वत पर अनशन लेकर देहत्याग किया पश्चात इन्द्र महाराजा ने वहाँ आकर प्रदक्षिणा की इसलिये वो पर्वत क्या कहलाया ?
६. नमिउण स्तोत्र में अठारह अक्षर का मंत्र कैसा है ?
७. सर्व विरति कौन से कषाय के उदय से स्वीकारने का मन नहीं होता ?
८. आहार प्राप्त करने गृहस्थ का मान रखे वो क्या कहलाता है ?
९. चौथा गुणस्थानक कौनसा है ?
१०. कौनसी लेश्या के पुद्गल विविध रंग के होते हैं ?
११. वज्रस्वामी के पूर्वभव के मित्र देव ने उन्हें क्या दिया ?
१२. अचित्त वस्तु सचित्त से ढंकी हुई रही तो कौनसा दोष लगता है ?
१३. जिसमें पाँच प्रकार के प्रमाद हैं, वह कौनसा गुणस्थानक है ?
१४. चौदह राजलोक के स्वरुप का चिंतन करना कौनसा धर्मध्यान है ?
१५. कौन से सूत्र में गोचरी के सोलह दोषो का वर्णन आता है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. दोस २) कारा ३) पयडं ४) मणे ५) बुब्बुय ६) मुणेयव्वं ७) देशोन ८) जुवइहिं ९) हुंति १०) स्तुर्ये ११) धर्म्यं १२) ज्झाणाउ
१३. चउरंसा १४) रिक्ख १५) समग्घाया १६) गुणालये १७) विउव्वणाकालो १८) दुस्सउण १९) वेमाणिय २०) सराय

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) पद्मलेश्या	१) अनंतकाय	६) ग्यारह अंग	६) अभक्ष्य
२) गर्भज मनुष्य	२) भूरा वर्ण	७) कापोत लेश्या	७) छः लेश्या
३) प्रमत्त संयत	३) सोयाकार (सुई)	८) खोपरे का गोला	८) छठवा गुणस्थानक
४) नमिउणस्तव	४) वज्रस्वामी	९) अग्निकाय	९) मानतुंगसूरि
५) खरसैया	५) गरमी	१०) बर्फ	१०) ज्यादा शांत परिणामी

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. गोचरी मे श्रावक के निमित्त से साधु को कितने दोष लगते हैं ?
२. वज्रस्वामी ने कितने वर्ष की उम्र में अनशन व्रत लिया ?
३. पाँच इन्द्रियों के विषय कितने ?
४. देवों के द्वारा बनाया गया उत्तर वैक्रिय शरीर कितना समय टिक सकता है ?
५. गोचरी के कितने दोष साधु व श्रावक टालने की सावधानी रखें ?
६. ईश्वरी नाम की स्त्री ने कितने मुल्य वाले चाँवल पकाये ?
७. चौथे गुणस्थानक में कितनी प्रकृतियां सत्ता में रहती है ?
८. नारकी के जीवों को कितनी लेश्या होती हैं ?
९. वज्रस्वामी के जाने के पश्चात कौनसा संघयण विच्छेद हो गया ?
१०. गर्भज तिर्यंच को कितने संघयण होते हैं ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. देशविरतिधर जब सर्वविरति का स्वीकार करते हैं तब वे प्रमत्त संयत गुणस्थानक पर आते हैं ।
२. जो आहार अपरिपक्व हो और वहोरावे तो लेपकृत दोष लगता है ।
३. चोरी, वेश्यागमन, परस्त्रीगमन, व्यसन ये चार महाविगई हैं ।
४. नमिउण स्तवन के कर्ता मेरुतुंगसूरि हैं ।
५. कार्तिक बदि १ से फागुन सुदि पूनम तक पालाभाजी चलता है ।
६. अंतिम तीन लेश्या शुभ हैं ।
७. वज्रस्वामी का जन्म सोपारक नगर में हुआ था ।
८. कच्चे दूध, दही, छास के साथ कठोर धान्य खाने से द्वीइन्द्रिय जीव की उत्पति होती है ।
९. बाजार में से कोई भी वस्तु खरीदकर लाये और साधु को वहोराये तो क्रीत दोष लगता है ।
१०. संपूर्ण लोक जब आर्तध्यान में डूबा हुआ है, तब सर्व विरतिधर को भी मंद परिणामी आर्तध्यान हो सकता है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. साधु के लिये वैसे ही स्वयं के लिये ऐसे दोनों के लिये आहार बनाये तो मिश्र जाति दोष कहा जाता है ।
२. राग, द्वेष के कटु परिणाम का चिंतन करना वह अपाय विचय धर्मध्यान है ।
३. कषाय है वहाँ संसार है और संसार है वहाँ कषाय है ।
४. श्री पार्श्वनाथ प्रभु का स्मरण जो मन में करते हैं, उन्हें व्याधि तथा महादुःख नहीं होता ।
५. उस बालक ने पालने मे रह सुन-सुन ग्यारह अंग कंठस्थ कर लिये ।
६. सम्यग् दृष्टि जीव के हृदय में जिन भक्ति के साथ साथ गुरुभक्ति भी बसी हुई रहती है ।
७. अन्य वस्तु नीचे गिर रही हो और वहोरावे तथा साधु ले तो छर्दित दोष कहलाता है ।
८. देश विरतिधर जैसे जैसे आराधना में आगे बढता जाता है, वैसे वैसे रौद्र और आर्तध्यान मंद परिणामी बनता है ।
९. आत्म परिणाम यह भावलेश्या है ।
१०. रौद्रध्यानी जीव को हिंसा, असत्य, चोरी आदि में आनंद आता है ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. मानतुंग सूरि के इष्टदेव किसका शमन करते हैं । २) लेश्या समझाओ ।
३. साधु और श्रावक दोनों से लगते दोष कितने है, वह बताकर पहले तीन दोष समझाओ ।
४. देश, विरति गुणस्थानक समझाओ ।
५. वज्रस्वामी को मिली हुई लब्धि और उसका शासन के लिये उपयोग समझाओ ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :

शत्रुंजय अकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
... और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com